اکتوبر ۲۰۱۰ء

ماہنامہ شعاع عمل لکھنؤ

قَالَ اللّٰہُ تبَارَکَ وَتعَالیٰ قَدْ جَاءَکُمْ مِنَ اللّٰہِ نُورٌ وَ کِتَابٌ مُبِینٌ

بے شک تمہارے پاس اللہ کی طرف سے نور آیا ہے اور روشن کتاب

روضۂ امام موسیٰ کاظمؑ و امام محمد تقیؑ ، کاظمین ، عراق

نورہدایت فاؤنڈیشن، حسینیۂ غفرانمآب، چوک، لکھنؤ۔۳

R.N.I. No. UPBIL/2004/13526
Postel Regd.No. SSP/LW/NP-75/2008-10 Dispatch Date: 2 & 6 of Every Month

SHUA-E-AMAL

Lucknow

शुआ-ए-अमल

हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका लखनऊ

OCTOBER 2010

NOOR-E-HIDAYAT FOUNDATION

Imambara Ghufran Maab, Chowk, Lucknow-3 (U.P.) INDIA, Phone : 2252230

वर्ष-7

R.N.I. No. UPBIL/2004/13526
Postal Regd No-SSP/LW/NP-75/2008-10
P.O. Chowk. Dispatch Date: 2 & 6 of every month

अंक-3

सितम्बर - 2010

नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन की
हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका

शुआ-ए-अमल
"लखनऊ"

संरक्षक
मौलाना सै. कल्बे जवाद नक़वी साहब

सम्पादक
सै. मुस्तफ़ा हुसैन नक़वी 'असीफ़' जायसी

सलाहकारी परिषद
प्रोफ़ेसर अल्लामा सै० अली मुहम्मद नक़वी, प्रोफ़ेसर सै० हुसैन कमालुद्दीन अकबर,
प्रोफ़ेसर सै० इमरान हैदर, मु० र० आबिद, सैय्यद समीउल हसन वसीम, तज़्हीब नगरौरी

वार्षिक - 200 रु मिलने का पता क़ीमत - 20 रु

नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन
इमामबाड़ा हज़रत ग़ुफ़रानमआब मौलाना कल्बे हुसैन रोड
चौक लखनऊ - 3 (उ.प्र.) भारत। फोन न० 0522-2252230

सै. कल्बे जवाद नक़वी प्रिन्टर, पब्लिशर और प्रोपराइटर ने मासिक शुआ-ए-अमल (उर्दू, हिन्दी) निज़ामी आफ़सेट प्रेस विक्टोरिया स्ट्रीट लखनऊ से छपवाकर आफ़िस नूर-ए-हिदायत फ़ाउण्डेशन इमामबाड़ा ग़ुफ़रानमआब मौलाना कल्बे हुसैन रोड लखनऊ-3 से प्रकाशित किया। सम्पादक : सै० मुस्तफ़ा हुसैन नक़वी 'असीफ़ जाएसी'।

मजलिसे इदारत

- डॉ० अमानत हुसैन
- सै० सुफ़यान अहमद नदवी
- तज़हीब नगरौरी
- डॉ० आरिफ़ अब्बास
- मिर्ज़ा हुमायूँ क़दर

▼▼▼

R.N.I. No.
UPBIL/2004/13526

▼▼▼

Postal Regd. No.
SSP/LW/NP-75/2008-10

●●●

WEBSITE:
www.noorehidayatfoundation.com
www.al-ijtihaad.com

●●●

E_mail:
noorehidayat@yahoo.com
noorehidayat@gmail.com

ज़रे सालाना

1- यूरोप, अमरीका, कनाडाः
80 अमरीकी डालर
2- ख़लीजी मुमालिकः
60 अमरीकी डालर
3- एशिया, पाकिस्तानः
40 अमरीकी डालर
4- पाकिस्तान ज़मीनी डाकः
20 अमरीकी डालर

लाइफ़ मेम्बरशिपः 4000/-

फ़ेहरिस्ते मज़ामीन

(सितम्बर 2010ई० रमज़ानुल मुबारक-शव्वालुल मुकर्रम 1431हि०)

न० मज़मून व लेखक	पेज
1– **इस्लाम में औरतों का दर्जा** (आख़िरी क़िस्त) क़ाएदे मिल्लत मौलाना सै० कल्बे जवाद साहब क़िब्ला	3
2– **लब्बैक या हुसैन**अ० मौलाना सै० हसन ज़फ़र साहब क़िब्ला, कराची	9
3– **इत्तेहादे मिल्लत की ज़रूरत क्यों?** जनाब शकील हसन शमसी साहब, देहली	12
4– **मुख्य समाचार** इदारा	15

इजाज़े

इदारे को आयतुल्लाह आक़ाए सैय्यद अली सीस्तानीम०ज० और दूसरे मराजे की जानिब से सहमे इमाम (खुमुस) लेने की इजाज़त हासिल हैं।

इस्लाम में औरतों का दर्जा

क़िस्त-4

क़ाएदे मिल्लत मौलाना सै० कल्बे जवाद नक़वी, जनरल सेक्रेट्री मजलिस उलमा-ए-हिन्द
अनुवादः डॉ० आरिफ़ अब्बास

आख़िरी क़िस्त

(5)

दुश्मनाने इस्लाम की हमेशा ये कोशिश रही है कि इस्लाम के ख़िलाफ़ झूठा प्रोपगण्डा करके दो मक़सद हासिल करें (1) जो इस्लाम से दूर हैं, उन्हें दूर रखा जाए और वह इस्लाम के क़रीब न आने पाएं (2) कमज़ोर अक़ीदे के मुसलमानों को इस्लाम से बदज़न कर दिया जाए और इस्लाम के ख़िलाफ़ उनके दिलो दिमाग़ में शुकूको शुबहात पैदा कर दिए जाएं। जिस तरह से शैतान ने हज़रत आदम और हज़रत हव्वा को बहका लिया था और उनका जन्नती लिबास उतरवा दिया था उसी तरह से ये शैतान के नुमाइन्दे चाहते हैं कि मशिरक़ी दुनिया की पाक सिफ़त और नेक सरशत बच्चियों और ख़्वातीन को ममनूआ फल खाने पर आमादा कर लें, ताकि नजाबतो शराफ़त का लिबास (हिजाब) उनके जिस्म से उतर जाए और उन्हें इज़्ज़त और करामत और बुलन्द किरदारी के आसमानों से खींच कर बेशर्मी, बेहयाई और बेइज़्ज़ती के दलदलों में ले आएं।

क़ुरआन मजीद ने ख़्वातीन को इज़्ज़तो शराफ़त की मेराज पर पहुँचाया है। किताबे इलाही में एलान हो रहा है (मफ़हूम) ''और अल्लाह ही ने तुमको ख़ाक से पैदा किया, फिर नुतफ़ा में बनाया और फिर तुम्हारे जोड़े बनाए (सूर-ए-फ़ातिरः 11) आयत से ये नतीजा निकलता है कि इन्सान एक कुल और एक इकाई का नाम है, जिसके दो जुज़ हैं: औरत और मर्द यानी औरत+मर्द=इन्सान। लेहाज़ा अब ये सवाल ही नहीं उठता कि कौन पस्त है और कौन बलन्द, कौन अहम है और कौन ग़ैर अहम। जिस तरह से एक ही सिक्के के दो रुख़ होते हैं कि सिक्का उन दोनों के बग़ैर मुकम्मल नहीं होता या जिस तरह दिन और रात जब मिलते हैं तो ज़माने की तशकील होती है। फैसला नहीं हो सकता कि दिन ज़्यादा अहम है या रात, जिस तरह से जब मुस्बत और मनफ़ी तार मिलते हैं तो नूर पैदा होता है और फ़ैसला नहीं किया जा सकता कि कौन सा तार ज़्यादा अहम है। इसी तरह से इन्सानियत की तशकील दो जुज़ों से मिलकर होती है एक का नाम है मर्द और एक का नाम है औरत। औरत अगर कमज़ोर और नाज़ुक है तो ये नक़्स नहीं है। अगर मर्द क़वी और मज़बूत है तो ये उसकी बरतरी की दलील नहीं है, बल्कि दुनियाए इन्सानियत का हुस्न इस तज़ाद में है। अगर कोई मोतरिज़ हो तो ये ऐसा ही है जैसे कोई एतेराज़ करे कि जिस्म में आँखें नाज़ुक क्यों हैं? और हाथ पैर मज़बूत क्यों हैं? हाथ पैरों को भी आँखों की तरह नाज़ुक होना चाहिए था या आँख को भी पैरों की तरह मज़बूत होना चाहिए था, तब इन्साफ़ के तक़ाज़े पूरे होते मगर हर साहेबे अक़्लो नज़र कहेगा कि आँखों का हुस्न उसकी नज़ाकत में और हाथ पैरों की ख़ूबसूरती उनकी सख़्ती और मज़बूती में है। यहाँ हर बराबरी ज़ुल्म और नाबराबरी ऐन इन्साफ है, जिस तरह दरख़्तों की टहनियाँ फूल और पत्ते नर्म व नाज़ुक और हसीन होते हैं, जबकि तने और जड़ें सख़्त और खुरदुरी होती हैं, क्योंकि अगर ऐसा न हो तो दरख़्त का वजूद ही बाक़ी न रहे। इसी तरह दुनियाए इन्सानियत में औरत नर्म, लतीफ़ और नाज़ुक है और मर्द सख़्त व क़वी

क्योंकि इन्सानी समाज का वजूद इन्हीं मुतज़ाद हयात पर मुनहसिर है।

गुज़श्ता मज़मून में साबित किया गया कि ईसाईयों और यहूदियों की मज़हबी किताबों में जिनमे तहरीफ़शुदा तौरेत व इन्जील भी शामिल हैं, औरतों को पस्त तरीन मक़ाम पर रखा गया है। कोई कह सकता है कि मज़हब की बात छोड़िये ये देखिये कि यूरोपी समाज ने औरतों को बेहतरीन इज़्ज़त और मक़ाम दिया है और सारे हुक़ूक़ दिये हैं। इस पहलू पर भी गुज़श्ता किसी मज़मून में गुफ़्तगू हो चुकी है कि यूरोप में उन्नीसवीं सदी में सनअती तरक़्क़ी शुरु हुई और कसरत से कारख़ाने क़ायम हुए तब सरमायादारों ने नक़ली रिफ़ारमरों के ज़रिए औरतों की आज़ादी का नारा बलन्द किया। हक़ीक़त जानने के लिए यूरोप ही के एक मुफ़क्किर वेल डोरेन्ट के चन्द जुमले मुलाहेज़ा कीजिऐ, ''मसीहियत से ज़्यादा क़दीम आदात व रुसूम में अचानक तबदीली कैसे आ गई? इसकी इल्लत हम क्या बयान करें? हम यही कहेंगे कि इसकी उमूमी इल्लत मशीनों की कसरत थी। औरतों की आज़ादी यूरोप की सनअती इन्क़ेलाब की पैदावार है। इंगलैड की पार्लिमेण्ट में 1883ई० में पहली मरतबा ये क़ानून पास हुआ कि औरतों को हक़्क़े मिलकियत हासिल है और अपना कमाया हुआ पैसा अपने नाम से रख सकती हैं। ये बज़ाहिर बहुत आली और अरफ़ा ख़ातून पार्लिमेण्ट के उन मेम्बरों ने पास करवाया था जो बड़े-बड़े कारख़ानों के मालिक थे और मक़सद था इंगलिस्तान की औरतों को कारख़ानों में खींच लाया जाए। ये कारख़ानादारों की नफ़ा की लालच थी जिसने औरतों को एक गुलामी और बेचारगी से आज़ाद करवाकर कारख़ानों, दुकानों और जनरल स्टोरों की बदतर गुलामी और जाँगुदाज़ मशक़्क़त में फंसा दिया।'' वेल डोरेन्ट के बयान से मालूम हुआ कि 1882ई० में पहली मरतबा ख़्वातीन को यूरोप में हक़्क़े मिलकियत हासिल हुआ। इसी तरह जर्मन में 1900ई० में औरतों को हक़्क़े मिलकियत हासिल हुआ। सुइज़रलैण्ड में 1907ई० में और इटली में 1919ई० में, लेकिन पुर्तगाल और फ्रांस में अभी तक ख़्वातीन अपने पूरे हुक़ूक़ से महरूम हैं, लेकिन क़ुरआन मजीद ने आज से चौदह सौ बरस पहले औरतों को हक़्क़े मिलकियत अता कर दिया था (मफ़हूम) ''मर्दों के लिए वह हिस्सा है जो उन्होंने कमाया है और औरतों के लिए वह हिस्सा है जो उन्होंने हासिल किया है।'' (सूर-ए-निसाः 32)

इस्लामी क़वानीन न औरत की जानिबदारी करते हैं और न मर्द की, बल्कि दोनों की फ़ितरी और तबई ज़रूरियात के मुताबिक़ क़ानून बनाया गया है ताकि इस्लामी समाज अपने ख़ालिक़ और रब की हिदायात के ज़ेरे साया सआदत और नेक बख़्ती की मेराज पर पहुँच सके। आपने मुलाहेज़ा कर लिया होगा कि जो हुक़ूक़ यूरोप ने सौ बरस पहले दिए वह इस्लाम चौदह सौ बरस पहले दे चुका है। वह भी यूरोप वालों की तरह इक़्तेसादी फ़ायदा हासिल करने के लिए नहीं, बल्कि शराफ़ते इन्सानी की हिफ़ाज़त और अद्लो इन्साफ़ के तक़ाज़ों को पूरा करने के लिए। यूरोप ने औरतों को हक़ दिया, मगर साथ ही साथ ख़ानदानी निज़ाम को तबाह व बर्बाद कर दिया, मगर इस्लाम ने ख़ानदानी रिश्तों को मज़बूत करते हुए औरत और मर्द के हुक़ूक़ मुअय्यन फ़रमाए। यूरोप ने हक़ देने का ढिंढोरा तो पीटा, मगर एक ज़ंजीर औरत की गर्दन से उतार कर दूसरी ज़ंजीर डाल दी और उसे अपनी फ़ितरत से बग़ावत पर आमादा कर दिया, मगर इस्लाम ने औरतों को तो उनका हक़ भी दिया, लेकिन उनकी इज़्ज़त व हुरमत और उनकी शख़सियत और फ़ितरी पहचान को महफ़ूज़ रखते हुए।

इस्लाम के ख़िलाफ़ अहमक़ाना प्रोपगण्डा किया जाता है कि यहाँ औरत और मर्द के हुक़ूक़ बराबर नहीं हैं। मेरे ख़याल में अगर दिक़्क़ते नज़र से काम लिया जाए तो मसावात हर जगह मुताबिक़े अद्ल नहीं होती, बल्कि कभी तो मसावात और बराबरी की कोशिश ज़ुल्म बन जाती है। इस तरह तफ़ावुत और नाबराबरी हर जगह ज़ुल्म नहीं होती, बल्कि ऐन अद्ल बन जाती है। फूल लतीफ़ और नाज़ुक होते हैं, शाखें मज़बूत और सख़्त होती हैं। अगर शाखें मज़बूत न हों तो फूल अपने हुस्न की नुमाइश नहीं कर पाएंगे और अगर फूल और फल अपनी फ़ितरी सिफ़ात खो दें तो शाख़ें अपने वजूद

का इज़्हार नहीं कर पाएंगी। दूसरे लफ़्ज़ों में फूल दरख़्त की ज़िन्दगी की अलामत हैं और मज़बूत शाख़ें और दरख़्त फूलों के हुस्न के मुहाफ़िज़ हैं। यहाँ भी अगर हम मसावात और बराबरी का दम भरें तो इससे बड़ी बदअक़्ली और क्या होगी। औरतों की आज़ादी का झूठा नारा देने वालों की कोशिश है कि औरतों की शबीह बन जाएं। ये बात बज़ाते ख़ुद सिन्फ़े निस्वाँ की तौहीन है। इसका मतलब ये निकलेगा कि औरत होना बाइसे ज़िल्लत है। औरतें मर्दों के बराबर आ जाएं ऐसा नारा देने वाले नादानिस्ता साबित कर रहे हैं कि मर्दों की ज़ात बलन्द है और औरतें पस्त हैं, औरतें मर्दों जैसी बनें ताकि बराबरी पैदा हो। ये तो ऐसा ही है कि फूल तमन्ना करें कि अपना हुस्न और नज़ाकत खोकर शाख़ों और जड़ों जैसे खुरदुरे और मज़बूत बन जाएं या शाख़ें तमन्ना करें कि फूलों और कलियों जैसी नज़ाकत हासिल कर लें ताकि मसावात और बराबरी हो जाए। ऐसी मसावात से ख़ुद दरख़्त का वजूद ख़त्म हो जाएगा।

(बशुक्रिया रोज़नामा राष्ट्रीय सहारा (उर्दू) 2 जुलाई 2010ई०)

(6)

इस से पहले के मज़मून में अदालत की बात आई थी। अदालत के दो मानी बयान किए गए हैं (1)किसी चीज़ को उसके मुनासिब मक़ाम पर रखना, (2)हर हक़दार को उनका हक़ देने का नाम अदालत है। यहाँ पर इन्तेहाई अहम और नाज़ुक पहलू ये है कि जिस चीज़ को हक़ समझा जा रहा है और बतौर हक़ पहचाना जा रहा है उसका क़वानीने फ़ितरत के मुताबिक़ होना ज़रूरी है, जिस चीज़ को हक़ समझा जा रहा है, अगर वह फ़ितरी क़वानीन से टकरा रहा है तो समाज में फ़ितना और फ़साद पैदा हो जाएगा और वही हक़ मुख़ालिफ़े अदालत हो जाएगा। चाहे इन्फ़ेरादी रवैय्या हो या इज्तेमाई क़ानून उसका अल्लाह तआला की बनाई हुई फ़ितरत के मुताबिक़ होना ज़रूरी है।

इन्सान का बनाया हुआ जो भी क़ानून फ़ितरत से टकराएगा उसका नतीजा सिवाए तबाही और बरबादी के कुछ न होगा। पूरी कायनात में एक हमआहंग क़ानून जारी व सारी है और इसी कायनात का एक छोटा सा जुज़ इन्सान भी है। किताबे फ़ितरत के बिखरे हुए औराक़ ख़ुद इन्सानों का दर्स दे रहे हैं। एक छोटा सा परिन्दा 'बया' अपनी नन्हीं सी चोंच में एक छोटा सा तिनका लेकर आता है और अपनी मादा और बच्चों के लिए इन्तेहाई हसीन और मज़बूत आशियाना तैयार करता है। परिन्दों का मुताला करने वाले माहिरीन का अन्दाज़ा है कि ये नन्नहा सा परिन्दा तक़रीबन पचास हज़ार बार उड़ता है तब जाकर ये घर तैयार होता है जो हर लेहाज़ से महफ़ूज़ होता है। किताबे फ़ितरत ख़ुद दर्स दे रही है कि मर्द का काम है घर बनाए, ज़िन्दगी के लवाज़िम फ़राहम करे, घर से बाहर मेहनतो मशक़्क़त करे और औरत का काम घर के अन्दर का है। मशहूर मुफ़क्किर वेल डोरेण्ट ने लिखा है ''जंगों और मशीनों में हम इतना डूब गए हैं कि इस हक़ीक़त को चेक नहीं कर पा रहे हैं कि ज़िन्दगी की असासी वाक़िईयत न सनअत है और न सियासत। ये असासी वाक़िईयत इन्सानों के बाहमी ख़ुशगवार ताल्लुक़ात ख़ास तौर से माँ-बाप, मियाँ-बीवी और औलादों की आपसी हम आहंगी और हमदर्दी है।

आज मैं चाहता हूँ कि चन्द हदीसें पेश हों, जिनसे अन्दाज़ा होगा कि इस्लाम में मर्दो से ज़्यादा औरतों के लिए ताकीद है। पैग़म्बरे अकरमस० ने फ़रमायाः अगर कोई मर्द किसी महरम औरत की मुश्किल को हल करे और उसका दिल ख़ुश करे तो अल्लाह तआला उस मर्द की दुश्वारियों को रोज़े क़यामत आसान कर देगा। (उसूले काफ़ी, बाब फ़ज़्लुल बनात)

एक शख़्स रसूलुल्लाहस० की ख़िदमत में बैठा हुआ था कि ख़बर मिली कि उसकी बीवी के यहाँ लड़की पैदा हुई है। उस शख़्स के चेहरे का रंग बदल गया। रसूले अकरमस० ने फ़रमायाः तुझे क्या हो गया है, ज़मीन उसका बोझ उठाएगी, आसमान उस पर अपना साया करेगा, अल्लाह उसे रोज़ी अता फ़रमाएगा। एक फूल है जो तुझे क़ुदरत ने अता फ़रमाया है। दूसरी जगह इरशाद फ़रमाया कि जो कोई तीन बेटियों या तीन बहनों की किफ़ालत करे उस पर जन्नत वाजिब है। किसी ने पूछा अगर दो हों? आपने फ़रमाया अगर दो

भी हों। पूछा अगर एक हो? फ़रमाया अगर एक भी हो (यानी तब भी जन्नत वाजिब है)। (उसूले काफ़ी, किताबुन्निकाह)

रसूलुल्लाह[स०] ने फ़रमाया तुम्हारी बेहतरीन औलादें तुम्हारी बेटियाँ हैं। (वसाएलुश्शीआ, जिल्द-15 पेज-615) रसूलुल्लाह[स०] से पूछा गया कि औरतों का हक़ मर्दों पर क्या है? फ़रमाया कि जिब्रील ने औरतों के सिलसिले में इतनी बार मुझ से सिफ़ारिश की कि मुझे गुमान होने लगा कि कहीं उफ़ करना भी मना न हो जाए। (मुस्तदरकुल वसाएल, जिल्द-2 पेज-551) इमाम सादिक़[अ०] ने फ़रमायाः बेटियाँ नेकियाँ हैं और बेटे नेमत हैं। नेकियों के बदले में सवाब है और नेमतों के लिए हिसाबो किताब है।

ऊपर दी हुई अहादीस से अन्दाज़ा होगा कि इस्लाम सिन्फ़े ख़्वातीन पर कितना मेहरबान है कि अगर माँ-बाप लड़कियों की सही तरीक़े से किफ़ालत और तरबियत करें तो उन पर जन्नत वाजिब हो जाएगी। ऐसी कोई हदीस लड़कों के सिलसिले में नहीं मिलती। इमाम सादिक़[अ०] ने फ़रमाया कि जन्नत में अक्सरियत कमज़ोर ख़्वातीन की होगी, अल्लाह उनकी कमज़ोरी और सिन्फ़ की वजह से उन पर रहम फ़रमाएगा। इसी तरह आप देखेंगे कि बाप से ज़्यादा माँ के लिए ताकीद है। एक शख़्स रसूलुल्लाह[स०] के पास आया और कहा कि मेरी माँ बूढ़ी हो चुकी है, मेरे पास रहती है। मैं उसको अपनी पुश्त पर सवार करता हूँ, अपनी रोज़ी से खिलाता हूँ, उसके हर राहत व आराम का ख़याल रखता हूँ इसके बाद भी शर्मिन्दगी से उसकी तरफ़ निगाह नहीं करता हूँ। क्या मैंने माँ का हक़ अदा कर दिया? रसूलुल्लाह ने फ़रमायाः नहीं हरगिज़ नहीं। उसका पेट तुम्हारे लिए ज़र्फ़ था। उसका सीना तुम्हारी रोज़ी का सबब था। उसके पैर तुम्हारी जूतियों की जगह थे। उसके हाथ बलाओं के लिए सिपर थे, उसका दामन तुम्हारा गहवारा था। तुम्हारी माँ सिर्फ़ तुम्हारी ख़ातिर ये ज़हमतें बर्दाश्त करती थी और तुम्हारी ज़िन्दगी की दुआएं माँगती थी। तुम माँ की ख़िदमत तो कर रहे हो, मगर दिल में उसकी मौत के आरज़ूमन्द हो। रसूलुल्लाह[स०] ने अपनी ज़िन्दगी के आख़िरी लम्हात में तीन चीज़ों के लिए सिफ़ारिश फ़रमाई (1) नमाज़ (2) ख़्वातीन (3) ग़ुलामों के साथ नेक बरताव।

एक शख़्स रसूलुल्लाह[स०] की ख़िदमत में आया और पूछा किसके साथ नेकी करूँ। फ़रमाया अपनी माँ के साथ नेकी करो। उसने पूछा इसके बाद किसके साथ नेकी करूँ। फ़रमाया अपनी माँ के साथ नेक सुलूक करो। उसने फिर पूछा उसके बाद? फ़रमाया माँ के साथ। चौथी मरतबा फ़रमाया बाप के साथ नेक सुलूक करो। इमाम रिज़ा[अ०] ने फ़रमाया कि माँ का हक़ सबसे ज़्यादा लाज़िम और सबसे अहम वाजिब है, क्योंकि उसने 9 महीने तुम्हारा बोझ उठाया। कोई दूसरे का बोझ चन्द लम्हे ख़ुशी से नहीं उठाता, मगर उसने तुम्हारा बोझ हंसी ख़ुशी बर्दाश्त किया। वह दुश्वारियाँ बर्दाश्त कीं कि दूसरा उनके बर्दाश्त करने पर क़ादिर नहीं है। वह इस बात पर राज़ी रही कि ख़ुद भूकी रहे, मगर उसका बच्चा सैर रहे। ख़ुद प्यासी रहे, मगर बच्चा सैराब हो जाए। ख़ुद उरयाँ रह जाए, मगर औलाद को पूरा लिबास मिले, ख़ुद धूप में रहे, मगर बच्चा साए में रहे। हक़ तो ये है कि औलाद भी उनके साथ ऐसा ही नेक सुलूक करे, मगर औलाद के लिए इस एहसान का जवाब मुमकिन नहीं, मगर ये कि अल्लाह उसकी मदद फ़रमाए।

(बशुक्रिया रोज़नामा राष्ट्रीय सहारा (उर्दू) 16 जुलाई 2010[ई०])

(7)

गुज़श्ता मज़मून में अर्ज़ किया गया कि सरमायादारों ने औरतों की आज़ादी का नारा बलन्द किया और उनको हक़ दिलाने का प्रोपगण्डा भी किया, लेकिन मक़सद अपने कारख़ानों में सस्ते मज़दूरों की भर्ती थी। आज़ादी के झूटे नारों से मुतास्सिर होकर औरतें घरों से बाहर निकलीं, जिसके नतीजे में फ़ैमिली लाइफ़ और ख़ानदानी निज़ाम बिखर गया। सरमायादाराना ज़हनियत ख़ानवादों की तश्कील की मुख़ालेफ़त है, क्योंकि इसकी तरक़्क़ी का इन्हेसार ही इस बात पर है कि निज़ामे ख़ानवादा कि तारोपोद बिखर जाएं और आपसी मुहब्बत के रिश्ते टूट जाएं। उन्हें ऐसे मज़दूर चाहिए कि उनके कारख़ानों के लिए वक़्फ़ हो जाएं और सारे रिश्ते

तोड़कर सिर्फ़ उन्हीं के बनकर रहें। इसी फ़िक्र ने इन्सानी समाज को बेअन्दाज़ा नुक़सानात पहुँचाए हैं और इन्सान मशीन का पुरज़ा होकर रह गया। ये ख़ानदानी निज़ाम है जिसमें इन्सानी सिफ़ात परवरिश पाती हैं। मुहब्बत, रिआयत, आपस में एक-दूसरे की मदद, हमदर्दी, अफ़ोदरगुज़र, ईसार और क़ुर्बानी और दूसरी सिफ़तें जो इन्सानी समाज के बुनियादी अनासिर हैं, वह ख़ानवादा और घरेलू ज़िन्दगी ही में पैदा होते हैं और वहीं रुश्दो नुमु भी हासिल करते हैं। ख़ानदानी निज़ाम ही के ज़रिए अख़लाक़ी और फ़िक्री मीरास और ख़ानदारी शराफ़तें और फ़ज़ीलतें आइन्दा नसलों में मुन्तक़िल होती हैं।

एक बुज़ुर्ग ने बड़ी दिलचस्प बात कही कि औरतों की आज़ादी के नारे औरतों की तरफ़ से कम बलन्द होते हैं मर्दों की तरफ़ से ज़्यादा। ख़ुद औरतों को देखना चाहिए कि इस मुतालबे में कहीं मर्दों की ख़ुदग़र्ज़ी तो शामिल नहीं जिस पर उन्होंने हमदर्दी का नक़ाब डाल दिया है। पर्दे के ख़िलाफ़ मुहिम और औरतों को घर की चारदीवारी से बाहर निकालने का मुतालबा कहीं ऐसा तो नहीं है कि जैसे शहर के सारे चोर और डाकू मिलकर एहतेजाज करें कि लोग रातों को अपने घरों के दरवाज़े बन्द करके क्यों सोते हैं जिसकी वजह से उन्हें डाके डालने में दिक़्क़त होती है। ख़वातीन के लिए इस बात का जानना बहुत ज़रूरी है कि आज़ादी के मुतालबों में औरतों से हमदर्दी का जज़्बा कम है, मर्दों की ख़ुदग़र्ज़ी ज़्यादा है।

इस्लामी निज़ाम में नाइन्साफ़ी का शाएबा तक नहीं। इस्लामी क़वानीन उसके बनाए हुए हैं जो ख़ालिक़ भी है, रब भी है और अरहमर राहिमीन भी। जिसको जितनी ज़रूरत है और जिसमें जितनी फ़ितरी सलाहियत है उतना हक़ उसे दिया गया है, क्योंकि फ़ितरत का ख़ालिक़ भी वही है और क़ानूने शरीअत का बनाने वाला भी वही है। इसकी मिसाल इस तरह से दी जा सकती है कि दुनिया से रुख़सत होते हुए बाप चाहता है कि अपनी सारी जायदाद औलाद में बांट दे। उसके पास खेती के लिए ज़मीन भी है, दुकान भी है और कारख़ाना भी। दुकान, ज़मीन और कारख़ाने की क़ीमत बराबर-बराबर है। समझदार और तजुर्बेकार बाप ये देखेगा कि कौन औलाद कौन सी जायदाद बेहतर तरीक़े से संभाल सकती है तो जिसमें कारख़ाना चलाने की सलाहियत देखी उसे कारख़ाना दे दिया, जिसमें देखा खेती-बाड़ी का सलीक़ा पाया जाता है उस औलाद को खेती के लिए ज़मीन दे दी। जिसमें दुकानदारी की सलाहियत पाई उसे दुकान सुपुर्द कर दी। इस अमल को कौन नाइन्साफ़ी कहेगा? अगरचे तीनों चीज़ें अलग-अलग हैं, मगर क़ीमत और अहमियत बराबर है और फ़ितरी सलाहियत के मुताबिक़ तक़सीम की गई हैं। इसी तरह इन्सानी ज़िन्दगी के दो पहलू हैं। एक बाहरी ज़िन्दगी और एक घरेलू ज़िन्दगी। फ़ितरी सलाहियतों के मुताबिक़ मर्द को बाहरी ज़िन्दगी की ज़िम्मेदारी सौंप दी गई और औरतों को घर की मलका का दर्जा अता कर दिया, ताकि दोनों मिलकर इन्सानी समाज की तश्कील करें।

जब ये कहा गया कि औरत का अव्वलीन फ़रीज़ा और अहम तरीन ड्यूटी बहैसियत माँ के है तो बड़ी वावेला मचाई गई, लेकिन इस हक़ीक़त से कोई इन्कार नहीं कर सकता कि औरत के ज़हन और जिस्म को क़ुदरत की तरफ़ से ऐसे सांचे में ढाला गया है जो सिर्फ़ माँ के लिए मुनासिब है। जिस्मानी साख़्त के सिलसिले में एक दलील देना चाहता हूँ, जो नाक़ाबिले इन्कार है। मर्दों और औरतों के हाथों की हड्डियों के जोड़ में फ़र्क़ है। मर्दों के हाथों की हड्डियाँ इस तरह जुड़ी होती हैं कि वह ज़मीन से भारी वज़न अपने सर से ऊँचा उठा सकता है, लेकिन ख़वातीन के हाथों की हड्डियों की साख़्त ऐसी है कि वह हाथों को मोड़कर वज़न देर तक संभाल सकती हैं। तजुर्बे से साबित है कि अगर किसी ताक़वर मर्द को छोटा सा बच्चा दे दिया जाए तो ताक़तवर होने के बावजूद जल्द ही थक जाएगा, मगर एक धान-पान सी औरत किसी बच्चे को दिनभर गोद में लिए रहती है, मगर थकन का एहसास नहीं होता, क्योंकि उसके हाथों की साख़्त ही ऐसी है कि वज़न को गोद में देर तक संभाल सकती है। इससे नतीजा निकलता है कि औरत की ख़िलक़त का अहमतरीन

मक़सद एक बेहतरीन माँ बनना है। काश ये पैग़ाम उन ख़वातीन तक पहुँच जाए जो सियासी लीडर बनने के लिए बेताब हैं कि अच्छी माँ बनने का फ़न फ़रमांरवाई और लीडरी के फ़न से ज़्यादा दुश्वार भी है और अहम भी।

चूँकि इस मौज़ू पर आख़िरी मज़मून है लेहाज़ा मैं चाहता हूँ कि शरीअते इस्लामिया ने ख़वातीन को जो हुक़ूक़ अता फ़रमाए हैं उनमें से चन्द इख़्तेसार के साथ बयान हो जाएं, मगर ये मद्देनज़र रहे कि मैं जो भी अर्ज़ करूँगा वह फ़िक़्हे जाफ़री के मुताबिक़ है।

(1) मर्द, बीवी को घर के काम करने पर मजबूर नहीं कर सकता। देखा गया है कि दफ़्तर से शौहरे नामदार तशरीफ़ लाते ही खाने का मुतालबा करते हैं। अगर तैयार न हो तो बीवी को ज़बरदस्त डांट खानी पड़ती है और जब नोश फ़रमाने बैठते हैं तो कभी मिर्च ज़्यादा होने पर प्लेट उछाल दी तो कभी नमक ज़्यादा होने पर पतीली उलट दी। ऐसे मर्दों को मालूम होना चाहिए कि वह रोब जमाकर बीवी से काम नहीं ले सकते। अगर बीवी इन्कार कर दे तो ख़ादिमा रखना वाजिब है और अगर ख़ादिमा रखने की इस्तेताअत नहीं तो बावर्चीख़ाने में तशरीफ़ ले जाएं, चूल्हा जलाएं, पतीली चढ़ाएं और बीवी से पूछें आज क्या पसन्द फ़रमाएंगी। जब बीवी खाना नोश कर लें तो बर्तन धोएं। अगर घर में कूड़ा है तो झाड़ू उठाएं..... वग़ैरा-वग़ैरा। अगर घर के काम की उजरत बीवी माँगे तो देनी होगी।

(2) इस्लाम पर इल्ज़ाम लगाया जाता है कि मर्द को तलाक़ का हक़ है, लेकिन औरत को नहीं, मगर तलाक़े ख़ुला के ज़रिए औरत किसी भी नामुनासिब शौहर से छुटकारा हासिल कर सकती है। इसी तरह वक़्ते अक़्द, तलाक़ की वकालत शौहर से हासिल कर सकती है और कभी भी उस हक़ को इस्तेमाल करके अपने ज़ालिम और नाक़ाबिले क़ुबूल शौहर से नजात हासिल कर सकती है।

(3) अक़्द के वक़्त शर्त कर सकती है कि मेरे बीवी रहने तक शौहर दूसरा अक़्द करने का हक़ इस्तेमाल नहीं करेगा। अगर शौहर दूसरा अक़्द करे तो शर्त की ख़िलाफ़वर्ज़ी की बुनियाद पर तलाक़ का मुतालबा कर सकती है।

(4) आज अदालतें फ़ख़्रिया कहती हैं कि हमने मुसलमान औरतों को हक़ दिलाया और तलाक़ के बाद भी नानो नफ़क़ा पिछले शौहर पर लाज़िम कर दिया। हालांकि ये हक़, शरीअत औरत को पहले ही दे चुकी है। अक़्द के वक़्त शर्त कर सकती है कि अगर शौहर ने बिला वजह तलाक़ दी तो औरत के दूसरा अक़्द करने तक नानो नफ़क़ा देता रहेगा, लेकिन ये तमाम शरायत अक़्द के वक़्त होना चाहिएं।

(5) औरत दूध पिलाने की उजरत शौहर से ले सकती है। वमा अलैना इल-लल-बलाग़

(बशुक्रिया रोज़नामा राष्ट्रीय सहारा (उर्दू) 13 अगस्त 2010ई०)

हफ़्तावार ''वाएज़'' लखनऊ के जल्द ही मेम्बर बनिये

क़ाएदे मिल्लत मौलाना सै० कल्बे जवाद नक़वी साहब की सरपरस्ती और असीफ़ जायसी की इदारत में क़ौमी व मज़हबी अख़बार ''वाएज़'' जल्द ही वसीअ पैमाने पर शाया होने जा रहा है इन्शाअल्लाह ये हफ़्तरोज़ा ''हिन्दुस्तानी शिया इन्साइक्लोपीडिया'' की अहम दस्तावेज़ का काम करेगा। मोमिनीन से गुज़ारिश है कि 150/- रुपये मनीआर्डर के ज़रिये जल्द ही भेज कर मेम्बर बनें।

नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन

इमामबाड़ा ग़ुफ़रानमआब, मौलाना कल्बे हुसैन रोड, चौक, लखनऊ

फोनः 0522-2252230 **मोबाइलः 09335276180**

लब्बैक या हुसैन(अ०)

ख़तीबे इन्क़ेलाब मौलाना सै० हसन ज़फ़र नक़वी साहब क़िब्ला, कराची
अनुवादः डॉ० आरिफ़ अब्बास

अज़ादाराने हुसैन[अ०]!

अस्सलामु अलैइकुम वरहमतुल्लाहि व बरकातुह

आशूर-ए-मुहर्रम गुज़र गया मगर इस मरतबा इस शान से गुज़रा कि तारीख़ ने देख लिया कि अज़ादाराने हुसैन[अ०] किस तरह से अपने अहद को पूरा करते हैं वह अहद जो अज़ादारों ने मादरे हुसैन[अ०] से किया है, वह अहद जो अज़ादारो ने अपने सैय्यदो सरदार हुसैन मज़लूम[अ०] से किया है, वह अहद जो मातमदारों ने शोहदा-ए-कर्बला के साथ किया है।

मुज़फ़्फ़राबाद से लेकर करबला-ए-कराची तक शीआने हैदरे कर्रार ने अपने लहू में ग़र्क़ होकर अज़ाए हुसैन[अ०] को अपने लहू की लाली अता कर दी।

हमारा सलाम हो उन अलमदारों पर जिन्होंने ज़ख़्मों से चूर-चूर होकर भी अलमे हज़रत अब्बास अलमदार[अ०] को झुकने नहीं दिया, सारी दुनिया गवाह है कि जब कराची में यज़ीदी बाक़ियात ने जुलूसे आशूरा पर भयानक हमला किया तो एक अलम भी अलमदारों ने झुकने नहीं दिया।

हमारा सलाम हो उन अज़ादारों और मातमी दस्तों पर जिनका रास्ता रोकने के लिए ये भयानक हमला किया गया था मगर हुसैन[अ०] के इन जाँनिसारों के पाये सिबात में हलकी सी भी लग़ज़िश नहीं आई। ये अज़ादार अपनी लाशें उठाते रहे, ज़ख़्मी उठाते रहे मगर जुलूसे अज़ा न रुकने पाया और तारीख़ी तुज़्को एहतेशाम के साथ अपनी मंज़िल तक पहुँचा।

अज़ादाराने हुसैन[अ०]! ये मुख़तसर तहरीर एक तारीख़ी दस्तावेज़ के तौर पर पेश कर रहा हूँ इसे महफ़ूज़ रखियेगा ये सदियों बाद भी काम आयेगी इस तहरीर में उन हक़ाएक़ से पर्दा उठा रहा हूँ जिन पर मुताअस्सिब इन्तिज़ामिया पर्दा डालने की कोशिश कर रही है और हमेशा की तरह मज़लूमपर होने वाले ज़ुल्म को अपनी मर्ज़ी का रुख़ देने की कोशिश कर रही है ताकि हम पर होने वाले ज़ुल्म को लोग भूलकर दूसरे मसाएल में उलझ जाएं।

10 मुहर्रम बरोज़े आशूरा 1431[हि०] मुताबिक़ 28 दिसम्बर 2009[ई०] सुबह साढ़े आठ बजे नश्तर पार्क में मजलिसे आशूरा का इन्एक़ाद होता है बाद मजलिस लाखों अज़ादार नश्तर पार्क से एम०ए० जिनाह रोड पर जुलूस की सूरत में आते हैं जुलूस में दाख़िले के लिए सख़्त इन्तेज़ामात, कोई लाइटर भी लेकर जुलूस में दाख़िल नहीं हो सकता। नुमाइश जहाँ एम०ए० जिनाह रोड का आग़ाज़ होता है उसके दोनों तरफ प्लाज़े, पेट्रौल पम्प, सिनेमा और मुख़तलिफ़ मकातिबे फ़िक्र की मसाजिद मौजूद हैं जुलूस आगे बढ़ रहा है सदर की तरफ जो कराची का सबसे बड़ा बल्कि शायद पाकिस्तान का सबसे बड़ा बाज़ार है जुलूस का अगला हिस्सा सदर से मुड़ता है तिब्बत सेण्टर की तरफ जहाँ इमामिया स्टूडेन्ट्स आरगनाइज़ेशन के जवान अज़ादारों के लिए नमाज़े ज़ोहरैन का इन्तिज़ाम करते हैं तक़रीबन दो बजे नमाज़ होती है। वाज़ेह रहे कि सदर में पाकिस्तान की सबसे बड़ी इलेक्ट्रानिक मार्केट और तिब्बत सेण्टर पर पाकिस्तान की सबसे बड़ी स्पेयर पार्ट्स की मार्केट है। ३ बजे के बाद जुलूस तिब्बत सेण्टर से आहिस्ता-आहिस्ता आगे बढ़ता है, सईद मंज़िल, रेडियो पाकिस्तान, उर्दू बाज़ार,

जामे क्लाथ मार्केट, ईदगाह क्लाथ मार्केट इसके अलावा दोनों तरफ़ हज़ारों दुकाने और दर्जनों प्लाज़े।

अब चार बज रहे हैं जुलूस का अगला हिस्सा लाइट हाउस के क़रीब हो रहा है और बाक़ी जुलूस जिसमें लाखों अज़ादार मातम व नौहा में मश्गूल हैं वह पीछे है और बन्दर रोड, तिब्बत सेण्टर, सदर खचाखच अज़ादारों से भरा हुआ है आख़िरी सिरा भी नुमाइश पर है।

चार बज कर तेरह मिनट पर लाइट हाउस के सामने जुलूस के अगले हिस्से में जहाँ आगे-आगे स्काउट्स हैं और उनके बिलकुल पीछे अलम और शबीहें हैं।

अचानक बाएं जानिब धमाका हुआ इन्सानी आज़ा फ़िज़ाओं में बिखरने लगे। मगर सारी दुनिया के मीडिया ने दिखाया अलमदारों ने अलम झुकने नहीं दिये लमहों में ये ख़बर जुलूस के आख़िरी हिस्से तक पहुँच गई।

मगर ये क्या जुलूस तो पाँच किलोमीटर पीछे तक फैला हुआ था ये सारी आग सिर्फ डेन्सोहाल से बोलटन मार्केट तक क्यों लगी? अब मैं इसी सवाल का जवाब आपको देने जा रहा हूँ।

जब धमाका हुआ स्काउट्स और दीगर मोमिनीन की लाशें उठाने और ज़ख़्मियों को अस्पताल पहुँचाने में लग गये मगर चन्द मिनट के अन्दर-अन्दर कुछ लोग आगे भागते नज़र आते रहे जिनके हाथों में पेट्रोल के डब्बे, केमिकल, फ़ासफ़ोरस और सरिये हथौड़े हैं और ये गिरोह जिनमें अकसर मुँह पर ढाटे बाँधे हुए हैं अचानक ही दुकानों और मार्केट पर टूट पड़ते हैं और देखते ही देखते आग के शोले आसमान से बातें करने लगते हैं।

अज़ादार मुसलसल जुलूस आगे बढ़ा रहे हैं जैसे ही अज़ादार बोलटन मार्केट पर पहुँचते हैं जहाँ से जुलूस हुसैनिया ईरानियान जाने के लिए दाएं तरफ़ मुड़ता है अचानक ही सामने टावर की तरफ़ से उन पर फ़ायरिंग शुरु कर दी जाती है ताकि उन्हें बोलटन मार्केट की पास ही रोक दिया जाए और बोलटन मार्केट जिसमें आग लग चुकी थी वह सारा इल्ज़ाम अज़ादारों पर थोंप दिया जाए।

अब मैं आपके सामने और हर बाशऊर और साहेबे इन्साफ़ शख़्स के सामने चन्द सवालात रखता हूँ जिसके बाद दूध का दूध और पानी का पानी हो जायेगा।

1- अगर ये घिराव जलाव अज़ादारों ने किया था तो फिर सारा जुलूस जो बन्दर रोड, सदर, तिब्बत सेण्टर और नुमाइश तक मौजूद था उसने वहाँ घिराव जलाव क्यों नहीं किया? अगर वह चाहते तो क्या क्लाथ मार्केटें, इलेक्ट्रानिक मार्केटें, स्पेयर पार्टस की मार्केटें, सिनेमा, पेट्रोल पम्प्स कुछ महफ़ूज़ रह सकता था? मगर ऐसा नहीं हुआ क्योंकि अज़ादार इन रास्तों से गुज़िश्ता 60 साल से जा रहे हैं और यहाँ के अवाम और उनके जान व माल हमेशा महफ़ूज़ रहे हैं।

2- डेन्सू हाल और बोलटन मार्केट के इलाक़े के अलावा अज़ादारों ने वहीं पर मौजूद म्युनिसिपल कारपोरेशन, सिटी कोर्ट्स, मसाजिद और मदारिस को क्यों नज़रअन्दाज़ किया?

3- फूल प्रूफ़ इन्तिज़ामात के दावेदार अचानक सड़कें छोड़कर कहाँ फ़रार हो गये?

4- सी०सी०पी०ओ० ने फ़ौरन बयान दाग़ दिया कि खुदकश हमला है और जिस सर को खुदकश हमला आवर का सर क़रार दिया वह एक स्काउट्स का बदन निकला जिसके घर के दीगर अफ़राद भी शहीद हुए उस स्काउट का नाम है मुज़म्मिल शाह।

5- शहीद अब्दुर्रज़्ज़ाक़ जो रेंजर्स का सिपाही है उसके लिए सिताराए जुराअत का एलान किया गया है कि वह खुदकश हमला आवर से लिपट गया था और 31 दिसम्बर, 13 मुहर्रम के अख़बारात में आई०जी० सिंध का बयान छपता है कि उसे खुदकश हमला कहना क़ब्ल अज़ वक़्त है?

6- डी०आई०जी० साउथ 13 दिसम्बर को यही बयान दोहराते हैं कि अभी तक साबित नहीं हो सका है कि ये खुदकश हमला था या रिमोट हमला? (इस वक़्त भी जब मैं ये तहरीर कर रहा हूँ चैनलों पर डी०आई०जी० का यही बयान चल रहा है।)

7- बोलटन मार्केट और दीगर ताजिर तन्ज़ीमें

एलान करती हैं कि हमें मार्केट और दुकानें शिफ़्ट करने के नोटिस जारी किये गये थे और हम इस पर राज़ी नहीं थे।

8- मुख़्तलिफ़ ताजिर तनज़ीमों के मुताज़ाद बयान आना शुरु हो जाते हैं ताजिरों की तनज़ीमें एक दूसरें के ख़िलाफ़ बयान देना शुरु कर देती है?

9- लेकिन एक ताजिर भी अज़ादारों पर इल्ज़ाम नहीं लगाता बहरहाल इस बिरादरी का अरबों रुपये का नुक़सान तो हुआ है ना?

यहाँ हम अपनी ताजिर बिरादरी को भी ये यक़ीन दिलाना चाहते हैं कि हम अपने शोहदा के ग़म में आपके नुक़सानात को नहीं भूले हैं हम आपके दुख में बराबर के शरीक हैं और आप ने क़ुबूल किया तो हम अपनी मिल्लत में आपके लिए Fund Raising (फण्डरेज़िंग) मुहिम चलाने को तैयार हैं।

अज़ादाराने हुसैन! हक़ीक़त यही है कि हमारी अज़ादारी को एक भयानक साज़िश को अमल दरअमाद करने के लिए चारा बनाने की कोशिश की गई। ताकि एक तीर से कई शिकार किये जाएं आप ने देख लिया कि फ़ौरन ही एक नासिबी टोला जुलूसों को रुकवाने की सदाएं बलन्द करने लगा ये वही टोला है जो रोज़ मुल्क में कहीं न कहीं धरने देता है रेलियाँ निकालता है और पूरे पाकिस्तान को डिस्टर्ब रखता है ख़ास तौर पर कराची से इनको खुदा वास्ते का बैर है क्योंकि उन्हें कराची और कराची वालों से कोई हमदर्दी नहीं बस ये अपनी सियासी मुख़ालिफ़तों और नफ़रतों का बुख़ार कराची से निकालना चाहता है। बजाए इसके कि हमारे ज़ख़्मों पर मरहम रखा जाता, इन्तिज़ामिया ने अपने शैतानी मक़ासिद को अमली जामा पहनाने के लिए हमारे ज़ख़्मोंपर नमक पाशी शुरु कर दी बजाए इसके कि हमारी क़ौम जिस आग में जल रही है उसे बुझाने की कोशिश की जाती उस पर और मज़ीद तेल छिड़का जाने लगा और आज ये कोई नई बात नहीं हुई हम गुज़श्ता तीस बरस से देख रहे हैं कि हमारे घर जलते हैं और सज़ाएं भी हमें मिलती हैं मसाजिद और इमाम बारगाहें हमारी जलें कोड़े भी हमें ही मारे जाते हैं जनाज़े हमारे हम उठाते रहे और खुफ़िया हाथ हमारे जनाज़ों को सुबूताज़ करके हमें तख़रीबकार बनाकर पेश करते रहे लेकिन अब ऐसा नहीं होने दिया जायेगा मिल्लते जाफ़रिया पाराचुनार से कराची तक बेदार हो चुकी है इन साज़िशों ने हमारी आँखें खोल दी हैं आज तक दुश्मन हमारे आपस के इख़्तेलाफ़ात से फ़ायदा उठाता रहा अब ऐसा नहीं होगा कराची हो या पाराचुनार, मुज़फ़्फ़राबाद हो या कोएटा, डेरा इस्माईल ख़ान हो या हिंगो शीआने हैदरे कर्रार बेदार हो चुके हैं।

ऐ अज़ादाराने फ़र्ज़न्दे ज़हरा[अ०] अपनी सफ़ों से काली भेड़ों को निकाल दीजिये किसी को इख़्तेलाफ़ी बात न करने दीजिये आज हर आलिम, हर ख़तीब और हर ज़ाकिर की ज़िम्मेदारी है कि जिस ज़िक्रे हुसैन[अ०] ने उन्हें इज़्ज़त व शोहरत की मेराज दी है और जो चाहा वह दिया है उस ज़िक्रे हुसैन[अ०] की ख़ातिर हक़्क़े नमक अदा करे हर मजलिस में मिल्लत पर होने वाले मज़ालिम और ज़्यादतियों का तज़किरा करे आज तमाम बानियाने अज़ा पर लाज़िम है कि अपनी मजालिस में पढ़ने वालों को पाबन्द करें कि वह क़ौम में हौसला और जज़्बा बेदार करें और आपस में इख़्तेलाफ़ात को मिम्बर की ज़ीनत न बनाएं हमें इस वतने अज़ीज़ में इज़्ज़त ववक़ार के साथ रहना है तो सिवाए मुत्तहिद होने के और कोई रास्ता नहीं सिर्फ़ हम नहीं आज हमारा पूरा मुल्क दहशतगर्दों के हाथों ख़तरात का शिकार है और फितना व फ़साद के जहन्नम की तरफ़ ढकेला जा रहा है आईये अहद कीजिये कि अपने शोहदा के ख़ून को रायगाँ नहीं जाने देंगे दुश्मनाने दीन और दुश्मनाने पाकिस्तान की हर चाल को नाकाम बना देंगे और ख़ून के आख़िरी क़तरे तक परचमे अब्बास[अ०] को बुलन्द रखेंगे।

ज़माना माँग रहा है सुबूते इश्क़े हुसैन[अ०]
लहू से काटेंगे शमशीर लिख दिया जाए
सितमगरों की कलाई मरोड़ने के लिए
जबीने वक़्त पे शब्बीर[अ०] लिख दिया जाए

वस्सलाम
या अली मदद
हसन ज़फ़र नक़वी

इत्तेहादे मिल्लत की ज़रूरत क्यों?

जनाब शकील हसन शमसी साहब "राष्ट्रीय सहारा" देहली
अनुवादः डॉ० आरिफ़ अब्बास

बचपन से जवानी तक मैंने लखनऊ की गलियों की ख़ाक छानी। ये एक ऐसा शहर है, जिसकी सक़ाफ़त, नफ़ासत, शराफ़त, नज़ाकत और ज़बान की लताफ़त सारी दुनिया में मशहूर है। यहाँ का शिया-सुन्नी फ़साद और हिन्दू-मुस्लिम इत्तेहाद भी बहुत मशहूर है। तक़रीबन 30 साल पहले मेरे एक अज़ीज़ पाकिस्तान से लखनऊ आए तो एक रेस्टोरेन्ट में हम अपने युनिवर्सिटी के दोस्तों के साथ बैठे थे। दिलचस्प बातें हो रही थीं। जब महफ़िल ख़त्म हो गई तो मेरे पाकिस्तानी अज़ीज़ ने कहा एक बात पूछूँ, क्या यहाँ के मुसलमान हिन्दुओं जैसे नाम रखने लगे हैं? मैंने हैरत से कहा कि क्यों? मेरे अज़ीज़ ने कहा कि तुम लोग जिस लड़के से बात कर रहे थे वह बातें तो बिल्कुल मुसलमानों जैसी कर रहा था, लेकिन नाम तुम लोग बार-बार अजय-अजय ले रहे थे। मैं उनकी परेशानी समझ गया, मैंने कहा कि अरे भाई वह मेरा दोस्त हिन्दू ही है और वह गढ़वाल का रहने वाला है, लेकिन पुराने लखनऊ में रहने की वजह से उसकी बातचीत, रहन-सहन और अन्दाज़े गुफ़्तगू ऐसा हो गया है कि पहचानना मुश्किल है। कई बार शिया-सुन्नी फ़साद के दौरान उसकी जान के लाले पड़ गए, क्योंकि बलवाई उसको भी मुसलमान समझ रहे थे लेकिन जब ये राज़ खुला कि वह मुसलमान नहीं है तो उसकी जान बची। इस पर मेरे पाकिस्तानी अज़ीज़ ने कहा कि जब ये अन्दाज़ा लगाना मुश्किल होता है कि कौन हिन्दू है और कौन मुसलमान, तो फिर यहाँ के लोग ये कैसे समझ जाते हैं कि कौन शिया है और कौन सुन्नी? इस पर मैंने कहा कि लखनऊ एक ऐसा बदनसीब शहर है, जहाँ शिया और सुन्नी मोहल्ले बटे हुए हैं। शिया मोहल्लों से जो चौड़ा होकर गुज़रे वह शिया, जो सुन्नी मोहल्लों से बेख़ौफ़ गुज़रे वह सुन्नी, यही चेहरों का ख़ौफ़ पहचान है। मुहर्रम में काली शर्ट पहन कर पाटानाला, बिल्लोचपुरा और पुल गुलाम हुसैन से गुज़रना दुश्वार है तो लाल पीले कपड़े पहन कर कशमीरी मोहल्ला, रुस्तम नगर और मुफ़्तीगंज से गुज़रना दुश्वार है। लखनऊ में शिया-सुन्नी एक दूसरें को शिया सुन्नी भी नहीं कहते थे, बल्कि खटमल मच्छर कह कर मुख़ातब करते थे। मुझे नहीं मालूम कि ये नाम किसने रखा और क्यों पड़ा, लेकिन दिलचस्प बात ये है कि कोई फ़िरक़ा अपने आपको इस नाम से मुख़ातब किये जाने पर नाराज़ भी नहीं होता था। ख़ैर बरसों बाद जब मैं 2003 में फिर पाकिस्तान गया तो अपने उसी अज़ीज़ के साथ कराची में घूम रहा था, उसने बड़े फ़ख़्र से कहा कि हमारे यहाँ लखनऊ की तरह शिया-सुन्नी वाले मोहल्ले नहीं, यहाँ सब मुसलमान रहते हैं। अभी हम कुछ ही दूर आगे चले थे कि उस इलाक़े की सक़ाफ़त कुछ अलग ही नज़र आने लगी। लम्बे, चौड़े और ऊँचे क़द के नौजवान दिखाई देने लगे, ज़बान और लिबास में भी काफ़ी फ़र्क़ लगा। मैंने पूछा कि ये कौन सा इलाक़ा है, तो मेरे अज़ीज़ ने कहा कि ये सोहराब कोट का इलाक़ा है, जहाँ पठान आबाद हैं। मेरे अज़ीज़ ने कहा ये बहुत ख़तरनाक इलाक़ा है, ज़रा सी देर में यहाँ बम फटने लगते हैं। ये सड़क मुहाजिरों और पठानों के दरमियान लड़ाइयों का

मरकज़ रही है। मैंने कहा कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता, यहाँ तास्सुब शिया-सुन्नी की शक्ल में न सही तो मुहाजिरों और पठानों के दरमियान मौजूद है, फिर मैं हर साल पाकिस्तान जाने लगा और हर साल वहाँ का माहौल बदलते हुए देखा, अब तो वहाँ भी शियों और सुन्नियों की बस्तियाँ और कालोनियाँ अलग-अलग बस रही हैं। इतना ही नहीं देवबन्दी और हनफ़ी हज़रात भी एक दूसरे से दूर रहने को ही तरजीह दे रहे हैं। इसके अलावा सारे पाकिस्तान के लोग पठानों से दूर रहना चाहते हैं, क्योंकि उनको ये डर लगा रहता है कि शायद इनमें से कोई तहरीके तालिबान, पाकिस्तान का मेम्बर न हो। इस साल मैं पाकिस्तान नहीं गया, लेकिन सुना है कि वहाँ शियों, हनफ़ियों और वहाबियों को टार्गेट किलिंग के ज़रिए मारा जा रहा है ताकि शहर में कोई बड़ा फ़साद हो सके। खुदा का शुक्र है कि हिन्दुस्तान के हालात बहुत बेहतर हैं, लेकिन ऐसा नहीं कि यहाँ के हालात को ख़राब करने की कोशिश नहीं हो रही है। लखनऊ का एक फ़सादी गिरोह लगातार किसी न किसी बात पर शिया-सुन्नी मसले को हवा देने की कोशिश कर रहा है। कुछ छोटे-छोटे अख़बार भी किसी ख़ास गिरोह के इशारे पर शिया और सुन्नियों के दरमियान कड़वाहटें बढ़ाने का काम कर रहे हैं।

दूसरी तरफ यू०पी० के मशहूर शहर रामपुर के एक क़सबे में मुसलमानों के दो मसालिक के दरमियान चल रही कशीदगी को कुछ लोगों ने इस क़दर हवा दी कि वहाँ फ़साद की नौबत आ गई और मक़ामी इन्तिज़ामिया को इसमें मदाख़लत पर मजबूर होना पड़ा। वहाँ नमाज़ की इमामत को लेकर हनफ़ी और देवबन्दी मसालिक के लोग एक दूसरे के सामने आ गए थे। मैं इस वाक़िए की तफ़सील में नहीं जाना चाहता कि कौन हक़ पर है और ज़्यादती कर रहा है, इस पर भी बात नहीं करना चाहता, क्योंकि इस से मसले का हल नहीं होगा, बल्कि बिगड़ जायेगा। मुझे तो अरबाबे करम की तवज्जोह इस तरफ दिलाना है कि ऐसे दौर में जब कि हर तरफ़ से इस्लाम के ख़िलाफ़ साज़िशें हो रही हैं, इस्लाम को बदनाम करने की भरपूर मुहिम चल रही है, दहशतगर्दी की आड़ में मुसलमानों ही को क़त्ल किया जा रहा है, मुसलमानों के सर ही दहशतगर्दी का ठीकरा फोड़ा जा रहा है और बेगुनाह मुसलमानों को ही जेलों में ठूँसा जा रहा है। ऐसे माहौल में कौन हस्सास मुसलमान ऐसा होगा, जो मसलक या गिरोह की बात करेगा? मैं तो समझता हूँ कि इस वक़्त मसलक की बात करने वाले लोग जाने अन्जाने में उन ताक़तों की मदद कर रहे हैं, जो इस्लाम के ख़िलाफ़ साज़िशें करने में मसरूफ़ हैं।

सवात के लोगों पर मसलक परस्ती का भूत आज से नहीं काफ़ी अरसे से सवार है और इसके ख़त्म होने के आसार भी नज़र नहीं आते, क्योंकि मुसलमानों के किसी गिरोह की जानिब से कोई संजीदा कोशिश इस मामले को ख़त्म करने के लिए नहीं की जा रही है। शायद हमारी समाजी और मज़हबी तनज़ीमें इस इन्तिज़ार में हैं कि वहाँ कोई बड़ा फ़साद हो जाए तो मुदाख़ेलत करें। कुछ लोगों का ये भी कहना है कि ये मामला बिल्कुल मक़ामी नौइयत का है, इसलिए इसको वहीं तक महदूद रखना चाहिए, लेकिन मेरा कहना ये है कि आज जो मामला मक़ामी लग रहा है, कल वह एक बड़ी आग की शक्ल भी इख़्तियार कर सकता है, क्योंकि इस्लाम दुश्मन ताक़तें कोई भी ऐसा मौक़ा अपने हाथ से जाने देना नहीं चाहतीं, जिससे कि मुसलमानों का शीराज़ा मुन्तशिर किया जा सके, इसलिए हम सब की कोशिश यही होना चाहिए कि फ़ितनों का सद्देबाब करने के लिए मुत्तहिद होकर निकल पड़ें। वैसे काफ़ी लोग ऐसे हैं, जो मुसलमानों में इत्तेहादो इत्तेफ़ाक़ बढ़ाने की कोशिश में लगे हुए हैं। मेरे एक दोस्त जनाब सिराज महदी भी उन ही मुसलमानों में से एक हैं, जो इत्तेहादे मिल्लत के लिए बराबर कोशिश कर रहे हैं। मैं उनके ज़रिये मुनअक़िद किये जाने वाले दो जलसों में शरीक हुआ और उन दोनों जलसों में शरीक होने वालों को बहुत मुख़लिस पाया है। इसी कन्वेन्शन की वजह से एक ज़बरदस्त तबदीली ये आई कि उलमा-ए-फ़िरंगमहल और उलमा-ए-ख़ानदाने इज्तेहाद जो हालात की सितम ज़रीफ़ी के सबब एक दूसरे से दूर हो गए थ वह एक ही स्टेज पर नज़र आए

शायद कुछ लोगों को मालूम न हो कि लखनऊ के यही दो घराने सदियों तक लखनऊ में शिया-सुन्नी इत्तेहाद की मशाल जलाए रहे और दोनों के दरमियान गहरे इल्मी ताल्लुक़ात रहे। इत्तेहादे मिल्लत कन्वेन्शन में सिर्फ़ शिया-सुन्नी फ़िरक़ों के लोग ही शामिल नहीं हुए बल्कि सलफ़ी, हनफ़ी और ख़ानक़ाही हज़रात की शुमूलियत ने भी ये साबित किया कि मुसलमान एक दूसरे के क़रीब आने को बेक़रार हैं।

पिछले महीने भोपाल में मुनअक़िद होने वाली इत्तेहादे मिल्लत कान्फ्रेंस के दौरान सबसे अहम चीज़ ये देखने में आई कि उलमा की एक बड़ी तादाद ने इत्तेहादे इस्लामी को फ़रोग़ देने में रोज़नामा ''राष्ट्रीय सहारा'' के ग्रुप एडिटर जनाब अज़ीज़ बर्नी की कोशिशों को इतना सराहा कि थोड़ी देर को ये लगने लगा कि जलसा इत्तेहादे मिल्लत का न होकर बर्नी साहब को एज़ाज़ देने के लिए मुनअक़िद किया गया है, शायद इसकी वजह यही थी कि रोज़नामा राष्ट्रीय सहारा ने मुसलमानों के मुश्तरका मसाएल को दुनिया के सामने इस तरह पेश किया है कि किसी को कहीं कोई चीज़ भी इख़्तेलाफ़ी नज़र नहीं आई। इत्तेहादे मिल्लत कन्वेन्शन में वैसे तो बहुत सी अहम तजावीज़ आईं, लेकिन सबसे अहम तजवीज़ ये थी कि मुसलमानों के तमाम फ़िरक़े एक दूसरे के ख़िलाफ़ कुफ़्र के फ़तवे देने का सिलसिला बन्द करें।

मैंने भी कुछ तजावीज़ इस जलसे में रखी थीं, जो जलसे ने इत्तेफ़ाक़े राय से पास की थीं, उसमें एक तजवीज़ ये थी कि जिन मुसलमानों को दहशतगर्दी के इल्ज़ाम में पकड़ा जाता है, उनके साथ बातचीत करने के लिए एक क़ानून सेल बनाया जाना चाहिए जो जेलों में बन्द उन तमाम लोगों के इण्टरव्यु करे, जिनको पुलिस ने दहशतगर्दी के इल्ज़ाम में बन्द किया है और उनसे इल्ज़ामों की हक़ीक़त मालूम की जाए और अगर वह बेगुनाह हैं तो उनकी पैरवी की जाए। मैंने कहा था कि जिस तरह मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड शरीअत पर होने वाले हमलों का मुक़ाबला कर रहा है, उसी तरह एक लीगल सेल ऐसा बनाया जाना चाहिए जो क्रिमनल लॉ के ग़लत इस्तेमाल (Misuse) का मुक़ाबला करे और परेशान किये जा रहे मुसलमानों की क़ानूनी मदद करे। कोलकाता की जेल में बन्द अब्दुल्लाह की जो दिल दहला देने वाली दास्तान रोज़नामा राष्ट्रीय सहारा के ज़रिये क़ारेईन तक पहुँची है, वैसी न जाने कितनी ही कहानियाँ अभी जेल की सलाख़ों के पीछे क़ैद होंगी। कितने तो ऐसे होंगे जिनको अपनी दास्तान बयान करने के लिए क़लम और काग़ज़ भी नहीं मिल रहा होगा, इस लिए इत्तेहादे मिल्लत के बैनर तले या मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड की तर्ज़ पर क्रिमनल लॉ के ग़लत इस्तेमाल के ख़िलाफ़ एक इदारा बनाकर हम मुसलमानों के एक बड़े तबक़े की मदद कर सकते है।

(बशुक्रिया रोज़नामा राष्ट्रीय सहारा उर्दू 30 जून 2010ई०)

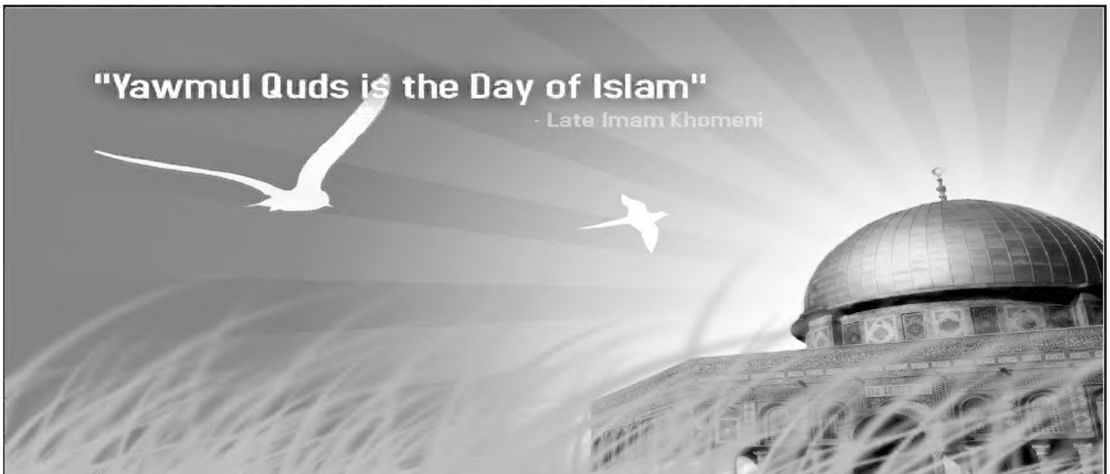

मुख्य समाचार

समझौता पूरी क़ौम के लिए क़ाबिले क़ुबूल होना ज़रूरी:

आयतुल्लाहिल उज़्मा सै० अली सीस्तानी

इराक़ के बुज़ुर्ग मरजए तक़लीद आयतुल्लाहिल उज़्मा सै० अली सीस्तानी ने कहा है कि बग़दाद-वाशिंगटन मुजव्विज़ा सेक्योरिटी मुआहेदा उस वक़्त क़ाबिले क़ुबूल होगा जब उसे पूरी क़ौम की हिमायत हासिल होगी। हुकूमत के क़रीबी समझे जाने वाले और सबसे बड़े हुक्मरां इत्तेहादी धड़े 'मुत्तहेदा इराक़ी एलाइन्स' के सरबराह अली अलअदीब ने नजफ़ अशरफ़ में आयतुल्लाह सीस्तानी से मुलाक़ात के बाद कहा कि उन्होंने सिर्फ़ उसी सूरत में इस समझौते को तस्लीम करने की बात की है जब पूरी इराक़ी क़ौम उसको क़ुबूल करेगी और अमरीका व इराक़ के दरमियान इस मुजव्विज़ा सेक्योरिटी मुआहदे पर क़ौमी इत्तेफ़ाक़े राय हासिल हो जाएगी। अली अलअदीब ने कहा कि आयतुल्लाह सीस्तानी ने इराक़ के सियासी हुक्काम और इसी तरह सियासी जमाअतों के धड़ों के रहनुमाओं को बग़दाद-वाशिंगटन मुजव्विज़ा सेक्योरिटी मुआहदे का मुकम्मल जाएज़ा लेने का ज़िम्मेदार क़रार दिया है और उन लोगों से कहा कि इस समझौते में इराक़ की खुदमुख़्तारी और क़ौमी इक़्तेदारे आला के तहफ़्फ़ुज़ का पूरा खयाल रखा जाए। पार्लियामेन्ट में हुक्मराँ धड़े के सरबराह अली अलअदीब ने कहा इराक़ की वज़ारती कौंसिल आज एक बार फिर अपने इज्लास में एक सेक्योरिटी मुआहेदे में की गई इस्लाहात पर अमरीका की तरफ़ से दिये गए जवाब का जाएज़ा लेगी और फिर उसके बाद इस पर वोटिंग होगी। उन्होंने कहा कि मराहिल से गुज़रने के बाद ये मुजव्विज़ा सेक्योरिटी मुआहेदा आख़िरी मन्ज़ूरी के लिए इराक़ी पार्लियामेन्ट में भेजा जाएगा।

लेबनानी फ़ौज की तरफ़ बढ़ने वाला हर हाथ काट देंगे:

सै० हसन नस्रुल्लाह

लेबनानी हथियारबन्द इस्राईल मुख़ालिफ़ तनज़ीम हिज़्बुल्लाह के जनरल सेक्रेट्री सै० हसन नस्रुल्लाह ने लेबनानी फ़ौजियों पर इस्राईली फ़ौजी हमले की शदीद मज़म्मत की है। उनका कहना है कि इस्राईल जंगबन्दी की हज़ारों मरतबा ख़िलाफ़वर्ज़ी कर चुका है, लेबनानी फ़ौज की तरफ़ बढ़ने वाले हर हाथ को काट देंगे। मरकज़े इत्तलाआते फिलिस्तीन के मुताबिक़ लेबनानी दारुल हुकूमत बैरूत में सन् 2006ई० की लेबनान पर इस्राईली जंग और उसमें लेबनानी मज़ाहमत की फ़तह की याद में मुनअक़िदा एक तक़रीब से ख़िताब करते हुए हसन नस्रुल्लाह ने कहा कि 2006ई० की सहयूनी जंग के बाद संयुक्तराष्ट्र के ज़ेरे एहतेमाम फ़ायरबन्दी की क़रारदाद नम्बर 1701 मंज़ूर की गई थी। हिज़्बुल्लाह और लेबनानी अवाम की जानिब से आलमी इदारे की क़रारदाद पर अमल किया जाता रहा, सीज़ फ़ायर की ख़िलाफ़वर्ज़ी नहीं की गई। इस क़रारदाद में फ़रीक़ैन को एक दूसरे के इलाक़ों में दाख़िल होने से रोका और मुसल्लह कारवाईयाँ न करने का पाबन्द बनाया गया था, लेकिन इस्राईल पिछले चार साल के दौरान इस क़रारदाद की 7000 मरतबा ख़िलाफ़वर्ज़ी कर चुका है। उन्होंने कहा कि इस्राईली फ़ौज की सीज़ फ़ायर की मुसलसल ख़िलाफ़वर्ज़ियों की वजह से लेबनानी मुजाहिदीनों में शदीद बेचैनी पाई जा रही है। हिज़्बुल्लाह ने शहरियों को सब्र की तलक़ीन की है कि वह मुआहेदे की ख़िलाफ़वर्ज़ी न करें लेकिन हमारे सब्र का इम्तिहान न लिया जाए। अब सब्र का पैमाना लबरेज़ हो चुका है। मुजाहिदीन इस्राईली फ़ौज को एक और बदतरीन शिकस्त देने के लिए तैयार हैं। हिज़्बुल्लाह के सरबराह ने इस्राईल को मुख़ातब करते हुए कहा कि "अरबों, लेबनानियों और फिलिस्तीनियों का दुश्मन इस ग़लतफ़हमी में न रहे कि लेबनान में मुज़ाहेमत नहीं रही। मुजाहिदीन पहले से ज़्यादा ताक़तवर हो चुके हैं। वह लेबनानी फ़ौज की हर वक़्त ख़िदमत करने और उसके साथ हर महाज़ पर लड़ने के लिए तैयार हैं। लेबनानी फ़ौज की तरफ़ बढ़ने वाले हर नापाक हाथ को काट कर रख देंगे। उन्होंने कहा कि लेबनान हमारे लिए एक मुक़द्दस सरज़मीन है। दुश्मन को उसमें अपने नापाक क़दम रखने और उसकी खुदमुख़्तारी और आज़ादी को चैलेन्ज करने की किसी सूरत में भी इजाज़त नहीं देंगे। उन्होंने कहा कि लेबनान के एक-एक घर में मुसल्लह मुजाहिदीन मौजूद हैं, हर लेबनानी शहरी क़ौम का सिपाही है। हिज़्बुल्लाह ने लोगों को रोक रखा है और मुसलसल सब्र का दामन थामे रखने पर ज़ोर दे रही है, लेकिन ऐसा लग रहा है कि अब मुजाहिदीन को दुश्मन के दाँत खट्टे करने के लिए और उसकी जारहियत का जवाब देने के लिए मैदान में निकलने की इजाज़त दे दी जाए। 2006ई० की जंग में लेबनानी मुजाहिदीन की जीत के हवाले से सै० हसन नस्रुल्लाह ने कहा कि इस्राईल अपने दामन पर एक और हार का दाग़ लगाने और अपनी तारीख़ में एक हज़ीमत का इज़ाफ़ा और करना चाहता है। लेबनानी सरज़मीन में दाख़िल होकर चार लेबनानी शहरियों को शहीद करके इस्राईली फ़ौज ने अपनी मौत को दावत दी है। पिछले वज़ीरे आज़म रफ़ीक़ हरीरी के क़त्ल की तहक़ीक़ात से मुताल्लिक़ उन्होंने कहा कि हम सब ये चाहते हैं कि हरीरी के क़त्ल की गहराई से जाँच की जाए और मुजरिमों को कैफ़रे किरदार तक पहुँचाया जाए लेकिन असल मुजरिमों के बजाए किसी दूसरे को इसमें घसीटना क़ुबूल नहीं करेंगे।

संयुक्तराष्ट्र संघ की पाबन्दियाँ काग़ज़ का बेकार टुकड़ा हैं: ईरानी राष्ट्रपति

ईरानी राष्ट्रपति डॉक्टर महमूद अहमदी नेजाद ने कहा कि संयुक्तराष्ट्र संघ की सलामती कौंसिल की पाबन्दियाँ बेकार काग़ज़ के टुकड़े के सिवा कुछ नहीं हैं और ऐसे मग़रिबी रहनुमा बेवकूफ़ हैं जो ये समझते हैं कि पाबन्दियों से ईरान की हुकूमत पर दबाव बढ़ जाएगा।

राष्ट्रपति अहमदी नेजाद सहाफ़त के क़ौमी दिन के मौक़े पर ख़िताब कर रहे थे। उन्होंने 'होलोकास्ट' के वजूद से एक बार फिर इन्कार किया और कहा कि यह इसलिए गढ़ा गया था ताकि यहूदियों को मज़लूम के तौर पर पेश किया जाए और इस्राईल के वजूद को जायज़ क़रार दिया जाए। अपनी तक़रीर में ईरानी राष्ट्रपति ने पश्चिमी मीडिया पर इल्ज़ाम लगाया कि उसने 11 सितम्बर के अमरीका के हमले को तोड़-मरोड़ कर पेश किया ताकि अमरीकी क़यादत में अफ़ग़ानिस्तान और इराक़ पर हमले का जवाज़ पेश किया जा सके।

ईरानी राष्ट्रपति ने ये भी कहा कि 11 सितम्बर के हमलों में कोई सहयूनी हलाक नहीं हुआ था। इन हमलों में हलाक होने वाले तक़रीबन 3000 अफ़राद की फ़ेहरिस्त इण्टरनेट पर मिल सकती है। उनमें से पाँच इस्राईली थे। अपनी तक़रीर में ईरानी राष्ट्रपति ने सहाफ़ियों के हुक़ूक़ के अपने रिकार्ड का बचाव किया। उन्होंने कहा कि पिछले पाँच सालों के दौरान उनकी हुकूमत ने सहाफ़ियों के ख़िलाफ़ कोई सख़्त इक़दामात नहीं किए।

अमरीका ने 9/11 का ड्रामा रचा था: ईरान

ईरान के राष्ट्रपति महमूद अहमदी नेजान ने कहा है कि न्युयार्क और वाशिंगटन डी०सी० में सितम्बर 2001ई० में होने वाले हमले असल में अमरीका की जानिब से अफ़ग़ानिस्तान और इराक़ पर हमलों का जवाज़ पैदा करने के लिए एक अमरीकी ड्रामा थे। जबकि रिपोर्ट्स के मुताबिक़ वाक़िए के वक़्त कोई यहूदी वर्ल्ड ट्रेड सेण्टर की इमारत में मौजूद नहीं था और न ही इस हादसे में किसी सहयूनी की हलाकत हुई, इस हादसे में कोई यहूदी हलाक नहीं हुआ था क्योंकि उन्हें एक दिन पहले ही ख़बर दे दी गई थी कि ट्रेड सेण्टर में अपने काम पर न आएं। तेहरान में राष्ट्रपति अहमदी नेजाद ने कान्फ्रेंस से ख़िताब करते हुए कहा कि इस बात का अभी तक सुबूत नहीं मिल सका कि 9/11 के हमलों में होने वाली तमाम हलाकतों का तल्लुक़ सिर्फ़ इसी वाक़िए से था और न ही वर्ल्ड ट्रेड सेण्टर की तबाही का तानाबाना इस हादसे के साथ जुड़ने के शवाहिद मिल सके हैं। ईरानी राष्ट्रपति ने कहा कि जैसे ही अमरीकी राष्ट्रपति बाराक ओबामा ने ईरान के साथ बाहमी इफ़्हामो तफ़हीम के ज़रिये मुज़ाकरात का न्योता दिया उसी वक़्त 9/11 के वाक़िए का एक बार फिर शोर मचा दिया गया।

इस्राईल-लेबनान के दरमियान झड़पें
सहयूनी फ़ौजी हलाक चार लेबनानी फ़ौजी शहीद

मक़बूज़ा फ़िलिस्तीन और लेबनान के दरमियान सरहद पर ईस्राईली और लेबनानी फ़ौज के बीच शुरु होने वाली झड़पों में एक सहयूनी फ़ौजी हलाक और पाँच ज़ख़्मी हो गए जबकि एक सहाफ़ी समेत लेबनान के चार बाशिन्दे शहीद और पांच घायल हो गए। झड़पें उस वक़्त शुरु हुईं जब अदसिया के मक़ाम पर इस्राईली फ़ौज ने लेबनान में दाख़िल होने की कोशिश की। इस्राईली फौज के आला इख़्तियाराती ज़रियों ने सहयूनी फ़ौजी की हलाकत की तस्दीक़ कर दी जबकि अलमनार टी०वी० के नुमाइन्दे ने वाज़ेह किया कि इस्राईली फ़ौज की जानिब से लेबनानी सरहदों के दाख़ले के बाद लड़ाई लेबनानी सरहदों में लड़ी जा रही है।

दूसरी तरफ़ लेबनानी फ़ौज के कमाण्डर ने एक बयान में कई इस्राईली फ़ौजियों की हलाकतों का दावा किया गया है। लेबनानी फ़ौज ने अपने बयान में कहा है कि दुश्मन इस्राईल ने अदसिया के इलाक़े से लेबनान और फ़िलस्तीन की तकनीकी सरहद से तजावुज़ किया, संयुक्त राष्ट्र की उबूरी फोर्सेज़ की जानिब से रोके जाने के बावजूद दुश्मन ईस्राईली फ़ौज ने लेबनानी सरहदें पार कीं, जिस पर लेबनानी फ़ौज ने इन्फ़ेरादी असलहे, आर०पी०जी० शेलों से इस्राईली फ़ौज का रास्ता रोका, इन झड़पों में दुश्मन फ़ोर्सेज़ ने बड़े पैमाने पर अस्लहा, मशीन गनें और टैंक इस्तेमाल किए, हमले में लेबनानी फ़ौज और शहरियों के घरों को निशाना बनाया गया।

बयान में कहा गया कि सूरते हाल अब तक ख़तरनाक है, संयुक्त राष्ट्र की उबूरी दौरानिये की फ़ौज ने हालात मामूल पर लाने के लिए राब्ते क़ायम करना शुरु कर दिये हैं ताहम अब तक लेबनानी फ़िज़ाओं में इस्राईली हेलीकाप्टर गर्दिश कर रहे हैं। मरकज़े इत्तेलाआत फिलिस्तीन के मुताबिक़ न्यूज़ एजेन्सी फ्रांस प्रेस के नुमाइन्दे ने बताया कि इस्राईली फ़ौज ने अदसिया गाँव में लेबनानी फ़ौजी अड्डे पर दस मीज़ाइल दाग़े हैं जिस के जवाब में लेबनानी फ़ौज ने भी फ़ायरिंग की, इसी तरह इस्राईली फ़ौज ने अदसिया के रास्ते पर हमले किए और इस्राईली जंगी जहाज़ों ने गाँव पर कम से कम दो मीज़ाइल दाग़े। दूसरी जानिब लेबनानी फ़ौजी ज़राए के मुताबिक़ झड़पें उस वक़्त शुरु हुईं जब सहयूनी फ़ौज ने लेबनानी सरज़मीन पर एक दरख़्त उखाड़ फेंका और इस्राईलियों ने फ़ायरिंग शुरु कर दी, जिस पर लेबनानी फ़ौज ने भी जवाबी फ़ायरिंग की।

ज़राए ने मज़ीद कहा कि लेबनानी सरहदों में बैरूत से 105 किलो मीटर दूर एक घर पर दो सहयूनी मीज़ाइल आकर गिरे। फ्रांसीसी न्यूज़ एजेन्सी के मुताबिक़ इस्राईली फ़ौजियों ने कैमरे के सामने रुकावट बनने वाले एक दरख़्त को उखाड़ फेंका ताकि गाँव से आगे भी देखा जा सके जबकि संयुक्तराष्ट्र की लेबनान में तैनात फ़ौज भी मौजूद है।